(1)

TELEPHONE INDEX

डा० अनीता श्रीवास्तव
विक्रम सिंह कन्या महाविद्यालय
चन्दौली मुगलसराय

मध्यकालिन इतिहास

स्नातक भाग 3
का
द्वितीय पेपर का

इकाई प्रथम — भारत के सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक इतिहास को जानने के साधन

प्राचीन भारतीय इतिहासकार एवं विद्वान पारलौकिक विषयों के चिन्तन मे इतने लीन रहे कि उन्होंने तत्कालीन इतिहास को जानने के साधनो की ओर कोई विशेष ध्यान नही दिया यही कारण है कि हमारे पास प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति को जानने के साधनो का नितान्त अभाव है। इसी प्रकार सल्तनत कालिन सांस्कृतिक इतिहास को जानने के साक्ष्य भी पर्याप्त नही है। जो कुछ सामग्री प्राप्त है। उसके सम्बन्ध प्रो० ए. एम. डे ने लिखा है।

" सल्तनत कालीन लेखको के वर्णन से यह स्पष्ट होता है। कि वे अपने स्वामी का यशगान

करने और इस्लाम की विजयो के प्रति धार्मिक उत्साह के कारण समाजिक संस्थाओ की ओर ध्यान नही दे सके। मुगल काल मे पर्याप्त राजकीयपत्र डायरियां, फरमान ऐतिहासिक ग्रन्थ और विदेशी यात्रियो के वर्णन उपलब्ध है। इन साक्ष्यो के सूक्ष्म विवेचन के द्वारा हम मध्यकालिन भारतीय इतिहास के सांस्कृतिक स्वरूप का अध्ययन कर सकते है।
डा० के.एम. अशरफ ने इन साधनो को निम्नलिखित भागो मे बाटा है। जो इस प्रकार है।

1 - ऐतिहासिक पुस्तके
2 - साहित्यिक पुस्तके
3 - अमीर खुसरो के ग्रन्थ
4 - विदेशी यात्रियो के वर्णन
5 - पत्र व्यवहार
6 - मुद्राये, अभिलेख व स्मारक
7 - आधुनिक ऐतिहासिक ग्रन्थ

ऐतिहासिक पुस्तके - मुल रूप से ये ग्रन्थ राजनितिक घटनाओ से भरपुर है, पर इसमे कही कही सांस्कृतिक इतिहास को जानने के साक्ष्य भी है। जिन्हे हम अध्ययन के द्वारा सरलता से समझ सकते है। जो इस प्रकार है।

ताजुल मासिर - हसन निजामी ने इस ग्रन्थ को 1225 मे लिखना शुरू किया इसमे 1192 से 1228 ई तक की घटनाओ का वर्णन है। इसमे मुख्य रूप से युद्धो का वर्णन है, पर साथ ही इसमें तत्कालिन मेलो और मनोरंजन के साधनो के बारे मे भी लिखा गया है। इस ग्रन्थ की रचना हसन निजामी ने अपने

संरक्षक कुतुबुद्दीन ऐबक के आज्ञानुसार की थी। इसमे "अरबी भाषा" का प्रयोग है। कहीं कहीं फारसी भाषा भी है। लेकिन इसका प्रारम्भ अरबी भाषा मे किया गया है। ~~और~~

तबकाते नासिरी — ये ग्रन्थ मिन्हाज-उस-सिराज द्वारा लिखित है जो 1260 मे पूर्ण हुआ इसमे, दासवंश मे होने वाली गतिविधियो का आँखो देखा वर्णन है। इन्होने अपनी रचना को 23 तबको (अध्यायो) मे विभाजित किया है। इसमे भारत से सम्बन्धित विभिन्न घटनाओ का वर्णन है।

तारीखे फिरोजशाही — ये 1359 मे जियाउद्दीन बरनी के द्वारा लिखकर पुरा किया गया। ये विशेषकर खलजी एवं तुगलककालीन शासन की गतिविधियो का प्रमाणिक वर्णन उपलब्ध करता है।

फतवा-ए-जहांदारी — ये ग्रन्थ भी जियाउद्दीन बरनी ने लिखा है। इसमे शरीयत के अनुसार सरकार के कानूनी पक्ष का वर्णन है।

इसके अतिरिक्त सल्तनत काल की अन्य महत्वपूर्ण पुस्तके है।
(1) ~~फु~~ फतुहात-ए-फिरोजशाही —
(2) याहिया बिन अहमद कृत तारीख-ए-मुबारकशाही
(3) निजामुद्दीन अहमद की ~~त~~ तबकात-ए-अकबरी, (4) अब्बास खाँ शेरवानी कृत तारीख-ए-शेरशाही।

Date

मुगल कालीन ग्रन्थ -

तुजुक - ए - बाबरी - ये तुर्की मे लिखी गयी है, ये बाबर की आत्मकथा है। इस ग्रन्थ का अंग्रेजी मे अनुवाद श्रीमती बेवरीज ने है।

हुमायूँनामा इसे हुमायु की बहन गुलबदन बानो बेगम ने लिखा है। ये प्रमाणिक ग्रन्थ है।

अकबरनामा इस ग्रन्थ की रचना अबुफजल ने किे है। ये अकबर के शासन काल को जानने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

आइन - ए - अकबरी - इस ग्रन्थ की रचना भी अबुल फजल ने की है, ये भी ग्रन्थ अकबर के शासन के हर पहलुओ को जानने का एक प्रमाणिक ग्रन्थ है। "डा० के. एम अशरफ ने लिखा है कि ये ग्रन्थ समाजिक इतिहास का प्रतीक है।"

इसी प्रकार मुगल कालीन इतिहास को जानने मे "तुजुक-ए- जहाँगीरी" जो जहाँगीर द्वारा लिखित है इसमे सत्रह वर्षो का इतिहास है। इसके अतिरिक्त जहाँगीर के शासन को जानने का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। ~~ग्रन्थ~~

मुल्ला दाउद की तारीखे अलफी, निजामुद्दीन अहमद कृत मुन्तखब- उल - तवारीख तबकाते - ए - नासिरी, इनायत खाँ कृत ~~बादशाहनामा~~ शाहजहाँनामा, इलियट और डाउसन की भारत का इतिहास आदि।

इनके साथ ही साहित्यिक पुस्तकें भी है। जो सांस्कृतिक इतिहास जानने के महत्वपूर्ण साधन है। जैसे - कुछ प्रसिद्ध कथा साहित्य, काव्य साहित्य, गीत, प्रयोगात्मक कला आदि आदि,

अमीर खुसरो के ग्रन्थ - अमीर खुसरो का प्रारम्भिक नाम "अबुल हसन था। ये बलबन से लेकर मुहम्मद तुगलक के काल का आँखो देखा वर्णन प्रस्तुत किया है।
इनकी साहित्यिक रचनाएँ है - पाँच दिवान, खमसा, मजनु लैला, आईना-ए-सिकन्दरी, हस्त बहिश्त,
इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक रचनाएँ भी है। खजाइन-उल-फतुह, तुगलकनामा,

इन साक्ष्यो के अन्तर्गत उन दिनो आये हुए विदेशी यात्रियो के वर्णन भी है। जो हमें तत्कालिन सांस्कृतिक इतिहास के अध्ययन महत्वपूर्ण है।
इन विदेशी यात्रियो के वृतान्त में मार्कोपोलो इब्न-बतूता, निकोलो कोण्टी, एस तामारो बर्नियर, टेवर्नियर आदि जो मुगलकालिन समाजिक एवं आर्थिक दशा का वर्णन किये है।

इसी क्रम साक्ष्यो के अन्तर्गत पत्थर पर खुदाई अभिलेख स्मारक भी है। जिसके माध्यम से उस युग की सांस्कृतिक

स्थिति का पता चलता है।

आधुनिक ऐतिहासिक ग्रन्थ मे -
चोपड़ा, पी० एन द्वारा सम्पादित - दि गजेटियर आफ इण्डिया खण्ड 2।
मजुमदार, आर. सी. - दि हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ इण्डियन पीपल, आदि।

इस प्रकार इन उपरोक्त साक्ष्यों के आधार पर हम भारत के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी प्राप्त कर सकते है।

सन्दर्भित पुस्तके; ① डा० अशोक श्रीवास्तव-कृत बारहवी शताब्दी मे उत्तर भारत की सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास

② भारत का समाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक इतिहास डा० - ए० के मित्तल